Gv – यीशु सत्तर को भेजता है लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४,
२६-२७ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु सत्तर को भेजता है

लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४, २६-२७

खुदाई: यीशु शिष्यों को दो-दो करके क्यों भेजते हैं? वह उन्हें अपने से पहले क्यों भेजता है? आज विश्वासी किस प्रकार “फसल काटने वाले मजदूर” की तरह हैं? भेड़ियों के बीच एक मेमना? प्रकाश यात्रा का उद्देश्य क्या था? वे किस प्रकार के घरेलू मेहमान होंगे? क्यों? वे जिन विभिन्न शहरों में जाते हैं वहां उन्हें कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए? उनका मूल संदेश क्या है? लूका १०:१-१२ सुसमाचार प्रचार के लिए स्वयं मसीहा की तात्कालिकता को कैसे दर्शाता है? स्वयं को यीशु मसीह के साथ जोड़ने का ख़तरा और आश्वासन क्या है? जब वे लौटे तो सेवेंटी ने क्या रिपोर्ट दी? मास्टर ने उनसे क्या कहा? वह आनंदित क्यों है? उन्होंने यह क्यों कहा कि वे धन्य हैं?

चिंतन: आप जहां रहते हैं वहां की फसल के बारे में आप कैसा महसूस करते हैं? क्या लोग खुशखबरी के लिए तैयार हैं? फसल में अधिक शामिल होने के लिए आपको क्या करना होगा? आपने कब भेड़ियों के बीच मेमने जैसा महसूस किया है? आपने उस अनुभव से क्या सीखा? ये छंद आपको येशुआ मसीहा में प्राप्त विशेषाधिकारों के बारे में क्या दिखाते हैं? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो प्रभु से दूर है? उसके लिए प्रार्थना करने में कभी देर नहीं होती।



बूथों के उत्सव के बाद, प्रभु ने सत्तर शिष्यों
(सीजेबी) को नियुक्त किया। इस्राएल के बारह गोत्रों से मेल खाने के लिए प्रेरितों की गिनती बारह है; यह लूका २२:३० (मती १९:२८) और प्रकाशितवाक्य २१:१२-१४ में स्पष्ट किया गया है। ये सत्तर उन सत्तर बुजुर्गों के अनुरूप हैं जिन्हें मोशे ने जंगल में नियुक्त किया था, जिन्होंने रुआच प्राप्त किया और भविष्यवाणी की (गिनती ११:१६, २४-२५)। और ऐसा प्रतीत होता है कि यह महज़ संयोग नहीं है कि

Gv – यीशु सत्तर को भेजता है लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४,
२६-२७ | 2

मुख्य चरवाहे ने जानबूझकर सत्तर को वह करने के लिए चुना जो महान महासभा के सत्तर सदस्य (देखें Lg– महान महासभा) आने वाले मसीहा के लिए लोगों को तैयार करने में विफल रहे थे।

यरूशलेम के रास्ते में, यीशु ने लोगों को खुशखबरी स्वीकार करने का अवसर देने के लिए सभी शहरों में दूत भेजे। यह मिशन कुछ महीने पहले के बारह मिशन के समान है। वहाँ, मसीह ने बारह को चुना था और उन्हें गलील में एक प्रचार अभियान में दो-दो करके भेजा था (देखें Fk– यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा)। गुरु अब यहूदिया में अधिक गहन पैमाने पर उसी पद्धति का उपयोग करता है। जैसे ही वह शहर के पास पहुंचा, उसके शत्रुओं के प्रति अत्यधिक घृणा ने और अधिक तीव्र और तीव्र कार्य की मांग की।

यह प्रकरण चार भागों में आता है, और प्रत्येक भाग इस प्रश्न का उत्तर देता है, “परमेश्वर के राज्य को कौन पहचानता है, और इसलिए प्राप्त करता है?



सबसे पहले निर्देश दिये गये। इसके बाद प्रभु
ने और सत्तर नियुक्त किए, और जिस जिस नगर और स्थान में वह जाने पर था वहां उन्हें अपने आगे दो दो करके भेज दिया (लूका १०:१)। निंदा करने के लिए दो गवाहों की आवश्यकता थी (व्यवस्थाविवरण १९:१५; गिनती ३५:३०)। जाहिर तौर पर बारह लोग यीशु के साथ रहे और उन्होंने इस मिशन में हिस्सा नहीं लिया। उसने उनसे कहा: फसल तो बहुत है, परन्तु मजदूर कम हैं। इसलिए, फसल के प्रभु से अपने फसल के खेत में श्रमिकों को भेजने के लिए कहें (लूका १०:२)। इस फ़सल को युग के अंत में अंतिम फ़सल के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उस समय विश्वासियों की वर्तमान फ़सल को संदर्भित करता है (देखें Cb– चेले यीशु से फिर से जुड़ते हैं)। योचानन बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु के बाद, प्रेरितों और सत्तर ने मसीह के लिए मार्ग तैयार करने का कार्य संभाला।

प्रभु ने उन्हें उनके बुरे स्वागत के बारे में चेतावनी दी। जाना! मैं तुम्हें मेमनों के समान भेड़ियों के बीच भेज रहा हूं। उन्हें सुरक्षा के लिए उस पर भरोसा करने की आवश्यकता होगी। मनी-बेल्ट, एक अतिरिक्त पैक या सैंडल की एक अतिरिक्त जोड़ी न लें; और सड़क पर लोगों के साथ हाथापाई करना बंद न करें (लूका १०:३-४ सीजेबी)। यहूदी शब्द सुमुज़ का अर्थ है गपशप करना, बेकार की बातचीत में शामिल होना

Gv – यीशु सत्तर को भेजता है लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४,
२६-२७ | 3

या गपशप करना। प्राच्य अभिवादन लंबे और समय लेने वाले होते थे, इसलिए उनसे बचना चाहिए। यह हिब्रू शमु’ओट से आया है, जिसका अर्थ है सुनी-सुनाई बातें या अफवाहें। येशुआ ने जो बात कही वह यह थी कि सत्तर लोगों को सड़क पर समय बर्बाद नहीं करना था बल्कि अपने गंतव्य की ओर बढ़ना था और उस मंत्रालय को जारी रखना था जिसके लिए उन्हें नियुक्त किया गया था।

जब आप किसी घर में प्रवेश करें, तो सबसे पहले कहें, “शालोम!” इस घराने को। यदि शालोम का साधक (एक विश्वासी) वहाँ है, तो आपका “शालोम!” उसके साथ अपना विश्राम पाओगे; और यदि नहीं है, तो यह आपके पास वापस आ जाएगा।यदि विश्वास मौजूद नहीं है तो शालोम का आशीर्वाद प्रभावी नहीं होगा। उसी घर में रहो, और जो कुछ वे दें खाओ और पीओ, क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है – घर-घर मत घूमो, इस प्रकार समय बर्बाद करो (लूका १०:५-७ सीजेबी)। पहली शताब्दी में टेबल फ़ेलोशिप का बड़ा प्रतीकात्मक महत्व था, क्योंकि इस तरह की फ़ेलोशिप परमेश्वर के लोगों की स्वीकृति का प्रतीक थी (प्रेरितों ११:३; गलातियों २:१२)।

सत्य का संदेश घोषित किया जाना चाहिए, चाहे इसका स्वागत किया जाए या नहीं। जब तुम किसी नगर में प्रवेश करो और तुम्हारा स्वागत हो, तो जो कुछ तुम्हें दिया जाए वही खाओ (लूका १०:८)। यदि शहर के लोग, चाहे वे यहूदी हों या गैर-यहूदी, उन्हें सद्भावना से प्राप्त करते थे, तो उन्हें अपने आप को परिवार का सदस्य मानना था, और उनके सामने रखी चीज़ों को खाना था, सभी यहूदी शालीनता को एक तरफ रख देना था। वहाँ जो बीमार हैं उन्हें चंगा करो (लूका १०:९ए)। इस प्रेरितिक युग के दौरान, यीशु के शिष्यों और जाहिरा तौर पर सत्तर शिष्यों को स्वयं गुरु के समान उपचार शक्तियाँ दी गई थीं। ये विशेष शक्तियाँ इस बात की पुष्टि करने के लिए थीं कि मसीहा वास्तव में उनके बीच में था। जैसे ही प्रभु अपने पुनरुत्थान के बाद स्वर्ग में चढ़े और प्रेरित धीरे-धीरे मर गए, वैसे ही ये पुष्टि करने वाले संकेत भी हुए। जैसे यीशु ने ठीक किया वैसे ही सत्तर भी ठीक हो गए। यद्यपि हमारे पास कोई विशिष्ट विवरण नहीं है, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि वे तुरंत ठीक हो गए, जन्म से ही जैविक बीमारियों को ठीक कर दिया, जो भी उनके पास आए उन्हें ठीक किया और, बारहों की तरह, मृतकों को जीवित किया (प्रेरितों ९:३६-४२, २०:९- १२).

और उन से कहो, “परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ गया है”। यह वर्तमान वास्तविकता की स्थानीय निकटता है, भविष्य की वास्तविकता की कालानुक्रमिक निकटता नहीं। परन्तु जब तुम किसी नगर में प्रवेश करो और तुम्हारा स्वागत न किया जाए, तो उस नगर की सड़कों पर जाकर कहो, “तुम्हारे लिये चेतावनी के लिये हम तुम्हारे नगर की धूल भी अपने पांवों से पोंछते हैं। तौभी इस बात का निश्चय रखो: परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है” (लूका १०:९बी-११)। सुसमाचार में रुचि न रखने वाले और इसे ग्रहण न करने वाले लोगों को प्रचार क्यों किया जाना चाहिए? क्योंकि संदेश स्वयं शक्तिशाली है, क्योंकि यह यहोवा से आता है; इससे उनका मन बदल सकता है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सत्तर को किसी भी विरोध के प्रति निष्क्रिय नहीं रहना था,

[illegible]

00 [illegible] 00 [illegible] 00 [illegible] [illegible]: [illegible], [illegible] 00 [illegible] 00 [illegible] [illegible] [illegible] (00:00 00:00; [illegible] 00:00)0 [illegible] 00 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 00:0 0 [illegible] [illegible] [illegible] 00, [illegible] [illegible] 00 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

Gv – यीशु सत्तर को भेजता है लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४,
२६-२७ | 5

५. शोल न केवल शारीरिक पीड़ा का स्थान है, बल्कि उससे भी अधिक हमारे प्रभु से पूर्ण और अंतिम अलगाव का भयानक अकेलापन है।

६. नरक को मुख्य रूप से एक प्रतिशोधी ईश्वर द्वारा अविश्वासियों को दी गई सजा के रूप में नहीं सोचा जाना चाहिए, बल्कि येशुआ हा-मशियाच को अस्वीकार करने वालों द्वारा चुने गए पापपूर्ण जीवन के प्राकृतिक परिणाम के रूप में माना जाना चाहिए।

७. स्वर्ग में रहने वालों के लिए पुरस्कार की कुछ डिग्री भी होंगी (दानियल १२:३; लूका १९:११-२७; प्रथम कुरिन्थियों ३:१४-१५; प्रकाशितवाक्य Ccपर मेरी टिप्पणी देखें – क्योंकि हम सभी को ईसा मसीह का न्याय आसन के सामने उपस्थित होना है)।

दूसरा, अस्वीकार करने वाले नगरों पर विपत्तियाँ घोषित की गईं। तुम पर धिक्कार है, चोराज़िन। तुम पर धिक्कार है, बेथसैदा। तब शायद सबसे ठोस बयान आता है – कि यदि जो चमत्कार आप में किए गए थे, वे दो सबसे दुष्ट गैर-यहूदी शहरों, टायर और सिडोन के गैर-यहूदी क्षेत्रों में किए गए थे, तो उन्होंने बहुत पहले ही टाट और राख में पश्चाताप कर लिया होता (लूका १०:१३) ; मत्तित्याहू ११:२०-२१) । सोर और सीदोन की दुष्टता और उनके विरुद्ध न्याय की भविष्यवाणियाँ तानाख में विस्तृत हैं (यशायाह Er पर मेरी टिप्पणी देखें – विलाप करो, तर्शीश के जहाजों; तुम्हारा किला नष्ट हो गया है)। टाट और राख दुःख और मातम से जुड़े प्राचीन निकट पूर्वी रीति-रिवाजों को संदर्भित करता है (योना ३:६; दानियल ९:३; एस्तेर ४:३)। चूंकि फिलीपुस, आन्द्रियास और सिमोन पतरस बेथसैदा से थे, येशुआ के मसीहाई दावों को सुनने और समझने का पर्याप्त अवसर था (यूहन्ना १:४४)।

परन्तु मैं तुम से कहता हूं, न्याय के दिन तुम्हारी अपेक्षा सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी (लूका १०:१४; मत्ती ११:२२)। यीशु यहाँ जो कहते हैं उससे यह स्पष्ट है कि वह कई बार चोराज़िन गए थे क्योंकि उनके अधिकांश चमत्कार अन्य दो शहरों में किए गए थे। अपने सुसमाचार के अंत में, युहन्ना ने कहा कि ईसा मसीह ने जो कुछ किया उसे लिखना असंभव है। इस प्रकार, सुसमाचार लेखकों को अपने लेखन में चयनात्मक होना पड़ा। चोराज़िन उस सामग्री का एक उदाहरण है जिसे पवित्र आत्मा की प्रेरणा के तहत छोड़ दिया गया था।

और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग पर उठा लिया जाएगा? नहीं, आप शोल तक जाएंगे (लूका १०:१५; मत्तित्याहु ११:२३ और भी देखें Ee – मेरे पास आओ, जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हैं, मैं तुम्हें आराम दूंगा)। आमतौर पर अंग्रेजी में इसे शोल के रूप में लाया जाता है; ग्रीक में इसका अनुवाद पाताल लोक यानी मृतकों का निवास स्थान है। तानाख शोल में एक धुंधली, अस्पष्ट अवस्था है जहां मृत आत्माएं इंतजार करती हैं। अधिकतर, अंग्रेजी संस्करण हेल शब्द का प्रयोग करते हैं।

कोई भी शहर जिसने बहत्तर के संदेश को अस्वीकार कर दिया, उसे ऊपर वर्णित जैसा ही

Gv – यीशु सत्तर को भेजता है लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४,
२६-२७ | 6

भयानक भाग्य भुगतना पड़ेगा। इसलिए, मसीहा ने उन लोगों को सांत्वना दी जिन्हें वह यह बताकर भेज रहा था कि जिस अस्वीकृति का वे अनुभव करेंगे वह उनकी अस्वीकृति नहीं थी – बल्कि उसकी अस्वीकृति थी! इन लोगों को जो असफलता मिलेगी वह उन्हें आसानी से हतोत्साहित कर सकती है। लेकिन येशुआ ने कहा कि जब उन्हें विफलता का सामना करना पड़ा, तो इसका कारण यह था कि राष्ट्र उसे प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं था (लूका १०:१६)। जो कोई तेरी सुनता है, वह मेरी सुनता है; जो कोई तुम्हें अस्वीकार करता है वह मुझे (येशुआ) अस्वीकार करता है; परन्तु जो कोई मुझे अस्वीकार करता है, वह उसे भी अस्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है (यहोवा) । इस प्रकार, जैसे ही प्रभु ने सत्तर लोगों को बाहर भेजा, उन्होंने उनसे कहा कि भले ही फसल भरपूर थी, उनके मंत्रालय की प्रतिक्रिया सीमित होगी और उन्हें उसी अस्वीकृति की आशा करनी चाहिए जो उन्होंने अनुभव की थी।

तीसरा, जीत की घोषणा की गई और मिशन का अर्थ परिभाषित किया गया। उन्हें सौंपा गया मंत्रालय पूरा करने के बाद, सत्तर लोग मसीह को रिपोर्ट करने के लिए लौट आए। हालाँकि, ऐसा लगता है कि वे अपने द्वारा किए गए चमत्कारों में व्यस्त थे। वे खुशी से लौट आए और कहा: प्रभु, यहां तक कि राक्षस भी आपके नाम पर हमारे अधीन हैं (लूका १०:१७)। उन्होंने अपने मंत्रालय के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया के बारे में कोई रिपोर्ट नहीं दी, बल्कि उस अधिकार के प्रति राक्षसों की प्रतिक्रिया के बारे में रिपोर्ट दी जो गुरु ने उन्हें सौंपा था। इसलिए, पापियों के उद्धारकर्ता के लिए उन्हें फटकारना आवश्यक था।

यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि अधिकार उनका नहीं था। यह उसका था। उन्होंने इसे उन्हें प्रदान किया था। और शत्रु अर्थात विरोधी की सारी शक्ति पर विजय प्राप्त करना; तुम्हें कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचेगा। अधिकार उसका था क्योंकि उसने धोखेबाज को उसके मूल पतन के समय स्वर्ग से निकाल दिया था। उसने उत्तर दिया: मैंने शैतान को स्वर्ग से बिजली की तरह पराजित होकर गिरते देखा (लूका १०:१८-१९बी; यहेजकेल २८:१२-१७ और यशायाह १४:१२-१५ भी देखें)। इसलिए यीशु उस विशेष क्षण में बड़े अजगर को स्वर्ग से बाहर फेंके जाने की बात नहीं कर रहा था, बल्कि यह कि उसकी शक्ति टूट गई थी और वह मसीह के अधिकार के अधीन था।

मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का अधिकार दिया है (लूका १०:१९ए)। ये दोनों बुराई के प्रतीक थे। क्रिया का पूर्ण काल आपको अधिकार दिया है, इसका तात्पर्य पहले से ही प्रेरितों को दिए गए अधिकार से है (लूका ९:१), न कि किसी भविष्य के अधिकार के लिए जैसे कि प्रेरितों १:८ में। यह उस मसीहाई साम्राज्य का पूर्वावलोकन है जो पृथ्वी पर महिमा के साथ मसीह की वापसी के साथ आता है। शिशु नाग के बिल पर खेलेगा, और सांप के घोंसले में अपना हाथ डालेगा (यशायाह ११:८ सीजेबी)।

हालाँकि, इस बात से खुश मत होइए कि आत्माएँ आपके अधीन हो जाती हैं, बल्कि इस बात से खुश होइए कि आपके नाम स्वर्ग पर लिखे गए हैं (लूका १०:२०)। यहूदी धर्म में इस

Gv – यीशु सत्तर को भेजता है लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४,
२६-२७ | 7

विचार को प्रमुखता से दर्शाया गया है कि क्षमा किए गए लोगों के नाम स्वर्ग में दर्ज किए जाते हैं। रोश-हशनाह (यहूदी नव वर्ष) की पूजा-अर्चना में जीवन की पुस्तक में लिखे जाने के लिए प्रार्थना शामिल है, और नौ दिन बाद योम-किप्पुर (प्रायश्चित का दिन) की पूजा-अर्चना में पुस्तक में “मुहरबंद” होने की प्रार्थना शामिल है। जीवन का, विचार यह है कि निर्णय उस दिन अंतिम हो जाता है। दानिय्येल १२:१ हमें बताता है कि जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ पाया जाएगा – छुटकारा पा लिया जाएगा। और यीशु ने घोषणा की: जो जय पाएगा उसे सफेद वस्त्र पहनाया जाएगा। मैं उस व्यक्ति का नाम जीवन की पुस्तक से कभी नहीं काटूंगा, बल्कि अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार करूंगा कि ऐसा व्यक्ति है (प्रकाशितवाक्य ३:५)। यहोवा के साथ हमारा व्यक्तिगत संबंध हमारी खुशी का कारण होना चाहिए।



चौथा, परमेश्वर का पुत्र पिता से प्रार्थना करता है।
यह दर्ज नहीं है, लेकिन उन सत्तर लोगों ने तब कटाई की गई फसल के बारे में रिपोर्ट की होगी। ऐसे लोग थे जिन्होंने उनके संदेश को स्वीकार कर लिया था और उद्धारकर्ता में अपना विश्वास रखा था। और इस प्रतिक्रिया के लिए, मसीह ने पिता को धन्यवाद की प्रार्थना की। यह इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि हमारे प्रभु ने पिता की योजना पर तब भी भरोसा किया जब चीजें सही नहीं हो रही थीं क्योंकि इज़राइल राष्ट्र ने पहले ही उन्हें अस्वीकार कर दिया था (देखें Eh – यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर दिया गया है)। उस समय यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के ईश्वर, मैं तेरी स्तुति करता हूं, क्योंकि तू ने ये बातें बुद्धिमानों और ज्ञानियों से छिपा रखीं, और बालकों पर प्रगट की हैं। हाशेम सभी पर संप्रभु है, और कुछ भी नहीं, यहाँ तक कि इज़राइल के लोगों द्वारा अस्वीकृति भी, मसीहाई मुक्ति की उसकी अंतिम योजनाओं को विफल नहीं करेगी। जो लोग अपने आप को बुद्धिमान समझते हैं, उन्होंने अपनी भ्रष्टता के कारण सत्य को नहीं देखा; परन्तु तानाख के धर्मी, जिसे छोटे बच्चों का विश्वास था, ने प्रकाश देखा। चूँकि उन्होंने परमेश्वर की बातों के लिए अपने हृदय खोले, इसलिए वे मसीह के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करने में सक्षम हुए। हाँ, पिता, यह वही है जो करने में आपको प्रसन्नता हुई (लूका १०:२१;

Gv – यीशु सत्तर को भेजता है लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४,
२६-२७ | 8

मत्ती ११:२५-२६)।

मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया है। अपनी दिव्य उत्पत्ति पर स्वयं येशुआ ने जोर दिया है जब उन्होंने कहा: पिता के अलावा पुत्र को कोई नहीं जानता, और पुत्र के अलावा कोई भी पिता को नहीं जानता और जिनके सामने पुत्र उसे प्रकट करना चाहता है (लूका १०:२२; मत्तित्याहु ११:२७) । इस तरह के बयानों से, यह स्पष्ट है कि हम मसीह को केवल एक अच्छे रब्बी या यहां तक कि एक महान भविष्यवक्ताओं के रूप में भी स्वीकार नहीं कर सकते हैं। वह इस्राएल के ईश्वर के बारे में अद्वितीय ज्ञान होने का दावा करता है क्योंकि वह स्वयं अनंत काल से पिता की उपस्थिति में था। दर्शन और धर्म ईश्वर या उसके सत्य पर तर्क करने में पूरी तरह असमर्थ हैं क्योंकि वे एक सीमित, निचले स्तर के हैं। मानवीय विचार और अवधारणाएँ सांसारिक हैं और आध्यात्मिक फल या मार्गदर्शन उत्पन्न करने में पूरी तरह से बेकार हैं। परमेश्वर को मानवीय समझ के अंधेरे और खालीपन को तोड़ना होगा क्योंकि उनके परिवार में अपनाए जाने से पहले, हम आध्यात्मिक रूप से मृत हैं (देखें Bw – विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करते हैं)।

फिर वह अपने शिष्यों की ओर मुड़ा और अकेले में कहा: धन्य हैं वे आँखें जो वही देखती हैं जो तुम देखते हो। जिन लोगों ने उस पर विश्वास किया था उन्होंने उसे मसीहा के रूप में देखा था। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम देखते हो, उसे बहुत भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने देखना चाहा, परन्तु न देखा, और जो कुछ तुम सुनते हो, उसे सुनना चाहते थे, परन्तु न सुना। (लूका १०:२३-२४) उन्होंने उसे देखा और उस पर विश्वास किया जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने बात की थी और जिसे देखने की लालसा रखते थे। उनके जैसा विशेषाधिकार भविष्यवक्ताओं को नहीं दिया गया था।

विरोधी, वह प्राचीन सर्प, इस युग का देवता है (दूसरा कुरिन्थियों ४:४)। फिर भी, जैसा कि राजा बेलशेज़र के मेहमान इस बात से अनजान थे कि उनका राज्य गिर गया था और उनके विनाश पर मुहर लगा दी गई थी (दनियेल ५:१-३०), इसलिए वर्तमान युग इस बात से अनजान है कि आत्माओं के दुश्मन का शासन टूट गया है। वह दीवार पर केवल कुछ लिखा हुआ देखता है, लेकिन वह जो देखता है उसे पढ़ नहीं पाता है। यहां, सत्तर शिष्यों का मिशन चर्च का सतत कार्य है। जैसे जीवित शब्द ने तब अपने राजदूतों को सशक्त बनाया था, वह आज हमें सशक्त बनाता है: इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं, जैसे कि परमेश्वर हमारे माध्यम से अपनी अपील कर रहे थे (दूसरा कुरिन्थियों ५:२०ए)।

हमारे दो काम हैं. सबसे पहले, उन लोगों के लिए राज्य को वास्तविक बनाना जिनके साथ हम संपर्क में आते हैं। हो सकता है कि आप एकमात्र “यीशु” हों जिनसे वे कभी मिलेंगे। जैसा कि मसीहा के प्रथम आगमन के दिनों में था, उनकी उपस्थिति पर्दा डाला गया था। आज, यह दीवार पर लिखी इबारत है, जो रुआच हाकोडेश द्वारा साकार रूप में घटित होती है। आज हम जो देख रहे हैं वह आने वाले गौरवशाली मसीहा साम्राज्य का

Gv – यीशु सत्तर को भेजता है लूका १०:१-२४ और मत्ती ११:२०-२४,
२६-२७ | 9

एक छोटा सा पूर्वानुमान मात्र है। उसे दूसरों के लिए वास्तविक बनाएं। इसलिए, दानिय्येल और सत्तर शिष्यों जैसे विश्वासियों को, दीवार पर लिखे उस लेख का अर्थ समझाना चाहिए, जिसमें यह घोषणा की गई है: परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ गया है (लूका १०:९बी)।